

गरतांग गली

चर्चा में क्यों?

उत्तराखण्ड में गरतांग गली का उपयोग भारत और तबिबत के बीच रेशम मार्ग व्यापार मार्ग के रूप में किया जाता था।

मुख्य बटु:

- यह उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी ज़िले में नेलांग घाटी में स्थित है। यह एक अद्वितीय पर्यटक आकर्षण के रूप में भी खड़ा है।
- उत्तराखण्ड के सुदूर कोने में स्थित, गरतांग गली हलचल भरे पर्यटन सर्कटि से दूर एक एकांत स्थान प्रदान करती है।
 - यह अनोखा स्थान प्रकृति के बीच प्रामाणिक अनुभव और शांति चाहने वाले यात्रियों को आकर्षित करता है।
 - गाँव में भोटिया जनजाति का नविस है, जो एक स्वदेशी समुदाय है जो अपनी लचीलापन, पारंपरिक जीवन शैली और सांस्कृतिक वरिसत के लिये जाना जाता है।
- गरतांग गली ऐतिहासिक रूप से भारतीय उपमहाद्वीप को तबिबत और मध्य एशिया से जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग था।
- व्यापारी इस पहाड़ी दर्रे से होकर गुज़रते थे, जिससे विभिन्न क्षेत्रों के बीच वस्तुओं, वचिरों और सांस्कृतिक प्रभावों के आदान-प्रदान में सुवधि होती थी।
- गरतांग गली चट्टान-किनारे लटकती सीढ़ी, जिससे गरतांग गली पुल के नाम से भी जाना जाता है, नेलांग नदी घाटी में 11,000 फीट की ऊँचाई पर एक ऊर्ध्वाधर रजि के साथ 500 मीटर तक फैला है।
 - इसका निर्माण पारंपरिक देशी शैली में शुरू में पेशावर के पठान व्यापारियों द्वारा किया गया था, जो तबिबत और भारत के बीच सलिक रोड व्यापार मार्ग के रूप में कार्य करता था।
 - वर्ष 1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद, भारतीय सेना द्वारा पहुँच प्रतबिधित कर दी गई, जिससे पुल जर्जर हो गया।
 - वर्ष 2015 में भारत द्वारा इस क्षेत्र को पर्यटन के लिये फरि से खोलने के बाद, पारंपरिक तरीकों का उपयोग करके लकड़ी की सीढ़ी को बहाल करने के प्रयास किये गए।
 - 59 वर्षों के बाद, पुल को अगस्त 2021 में जनता के लिये फरि से खोल दिया गया।

रेशम मार्ग

- यह प्राचीन वाणज्यिक मार्गों का एक नेटवर्क था जो पूर्व और पश्चिम को चीन से भूमध्य सागर तक जोड़ता था तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिये एक प्रमुख माध्यम के रूप में कार्य करता था।
- हान युग (207 ईसा पूर्व - 220 सीई) की शुरुआत में पूरे देश में चीनी रेशम के बढ़ते व्यापार ने "सलिक रोड" शब्द को जन्म दिया। 114 ईसा पूर्व के आसपास, हान राजवंश ने मध्य एशिया के माध्यम से व्यापार मार्गों का वस्तितार किया, मुख्य रूप से एक चीनी शाही दूत झांग कियान की यात्रा और मशिन के परिणामस्वरूप।
- सलिक रोड के साथ व्यापार के परिणामस्वरूप, चीन, भारतीय उपमहाद्वीप, फारस, यूरोप, हॉर्न ऑफ अफ्रीका और अरब की सभ्यताओं के बीच लंबी दूरी के राजनीतिक तथा आर्थिक संबंध स्थापति हुए।
- यद्यपि रेशम नसिसंदेह चीन से मुख्य नरियात था, रेशम मार्गों में कई अन्य वस्तुओं के साथ-साथ समनवति वचिरों, कई प्रौद्योगिकी, धर्मों और रोगों का आदान-प्रदान भी हुआ। सलिक रोड का उपयोग सभ्यताओं द्वारा वाणज्यिक व्यापार के साथ-साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान करने के लिये किया जाता था।

भोटिया जनजाति

- भोटिया या भोटिया चरवाहों की एक व्यावसायिक जाति है।
- उत्तराखण्ड के भोटिया लोग तीन सीमावर्ती ज़िलों-पथौरागढ़, चमोली और उत्तरकाशी में सात मुख्य नदी घाटियों में फैले हुए हैं।
- उत्तराखण्ड में सात प्रमुख भोटिया समूह हैं जोहारी, दरमिया, चौदांसी, ब्यांसी, मार्छा (माना घाटी), तोलछा (नीली घाटी) और जाध।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/gatang-gali>

